राधाकृष्ण पेपरबैक्स

रतिविलाप

शिवानी

Scanned with OKEN Scanner

राधाकृष्ण पेपरबैक्स में
पहला संस्करण : 2006
तीसरी आवृत्ति : 2009

© शिवानी साहित्य प्रकाशन प्रा. लि.

राधाकृष्ण पेपरबैक्स : उत्कृष्ट साहित्य के जनसुलभ संस्करण

राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
द्वारा प्रकाशित

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com
ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
द्वारा मुद्रित

मूल्य : रु. 70.00

आवरण : आदित्य पाण्डे

RATIVILAAP by Shivani

ISBN : 978-81-8361-066-7

Scanned with OKEN Scanner

क्रम्

रतिविलाप	9
किशनुली	36
कृष्णवेणी	65
मोहब्बत	103

Scanned with OKEN Scanner

राधाकृष्ण पेपरबैक्स

रतिविलाप

शिवानी

"...हमारी मित्रमंडली ने कई दिनों अपनी उस रसप्रिया सखी का मातम मनाया था फिर वर्षों तक मुझे उसका कोई समाचार नहीं मिला।..." वही अनसूया अपनी दारुण जीवनी की पोटली लिए लेखिका से एक दिन टकरा गई। जिन पर उसने भरोसा किया, उन्हीं विषधरों ने उसे डँसकर उसके जीवन को रतिविलाप की गूँज से कैसा भर दिया था !

" 'अनाचक ही वह पगली न जाने किए गाँव से अल्मोड़ा आ गई थी,' उस पर...उन्माद भी विचित्र था, कभी झील-सा शीतल, कभी...अग्निज्वाला-सा उग्र..." उद्भ्रांत किशनुली को कारवी का ममत्वमय स्पर्श पालतू और सौम्य बना ही चला था कि अभागी अवैध सन्तान 'करण' को जन्म दे बैठी। सरल, ममत्वमयी कारवी और पगली किशनुली और उसके 'ढाँट' करण की अद्भुत गाथा कभी हँसाती है, तो कभी रुला देती है।

•

वस्त्र चयन ही नहीं पुस्तक चयन में भी बेजोड़ थी कृष्णवेणी। पर दूसरों का भविष्य देख सकने की उसकी दुर्लभ क्षमता ने अनजाने ही उसका भविष्य भी कहला डाला तो? एक मार्मिक प्रेमकथा !

•

"मोहब्बत में खरे सोने की खाँटी लीक मैं कहाँ तक अछूती रख पाई हूँ, यह बताना मेरा काम नहीं है,...यदि फिर भी किसी को यह लगे वह अलाँ है या वह फलाँ है, तो मैं कहूँगी, यह विचित्र संयोग मात्र है... ।"

सम्पन्न घर में जन्म लेकर भी परित्यक्त रहा डॉ. वैदेही बर्वे का बेटा। अभिशप्त किन्नर बिरादरी के सदस्य बने परित्यक्त मोहब्बत की हृदय मथ देनेवाली कहानी।

राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली

ISBN : 978-81-8361-066-7
70 रुपये

9788183610667

मूल्य : 70 रुपये